2. लोक संस्कृति गैलरी

लोक संस्कृति गैलरी में संकलित की गई चीजें आस–पास के देहात से जुड़ी हैं तथा ये हरियाणा के सांस्कृतिक पक्ष को प्रर्दशित करती हैं, हरियाणा वर्तमान में स्वर्ण जयन्ती मना रहा है। इन 50 वर्षों में हरियाणा के लोगों की जीवन शैली, परम्पराओं, रोजगार की प्रकृति, गांव की सरंचना तथा दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुओं में काफी बदलाव आया है। यहां पर एकत्रित की गई चीजों को अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न गांवों से निशुल्क दी गई है। ये चीजें प्रायः हरियाणा के निमार्ण के प्रारम्भिक चरण को स्पष्ट करती है; जिसमें मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि यह हरितक्रान्ति से पूर्व देहात के जीवन की झांकी है।

जिसमें कृषि प्रायः पशु आधारित थी। बिजली सभी गांवों में नहीं पहुंची थी। गांवों में प्रायः अधिकतर घर कच्चे थे। मनोरंजन के तरीके भी परम्परागत थे तथा शिक्षा का प्रचार भी अधिक नहीं था। वर्तमान में प्रायः ये चीजें प्रचलन में नहीं हैं। नई पीढी के बच्चे तथा शहरी व्यवस्था में पले–बढ़े लोगों के लिए काफी नई चीज है वे प्रायः इन से नहीं जुड़े या इन्हें भूल चुके हैं। अतः धीरे–धीरे ये भी अतीत की विषय वस्तु बन रही है, यह एक प्रयास है सांस्कृतिक जीवन को संरक्षित रखने का, इस गैलरी को भी उपयोगिता की दृष्टि से हमने विभिन्न भागों में विभाजित किया है।

Scanned with Oken Scanner

(क). रसोई से सम्बन्धित वस्तुएं

रसोई आवास व्यवस्था का एक अति महत्वपूर्ण हिस्सा है। सभ्यता के प्रारम्भ से वर्तमान तक इसमें काफी बदलाव आते रहे। हरियाणा क्षेत्र में हरित क्रान्ति के बाद तथा अलग राज्य बनने के बाद जीवन शैली में काफी बदलाव आया है। इसके लिए परम्परागत रूप में प्रयोग होने वाली चीजों की जगह नई वस्तुओं ने ली है। परम्परागत रूप से प्रयोग होने वाली वस्तुओं को यहां संकलित किया गया है। इन चीजों में कटोरी, गिलास, रोटी रखने का बोइया, कागज व गजनी से घर में निर्मित बोईये, आचार रखने का मर्तबान, दरात, चक्कु, पला, पली, खुरचनी, कड़छी, ढोई, दूध बिलोने का झेरना, रई, तोली, चूल्हे पर आग जलाने के लिए प्रयुक्त होने वाली चूकनी इत्यादि है। इन चीजों में कुछ अति विशिष्ट जैसे झेरना तथा बारात में दिए जाने वाले गिलास भी है। जो इस क्षेत्र में सामान्य बात थी तथा बाराती भी हमेशा याद रखते थे कि किस बारात में कौन सा गिलास मिला था।

Scanned with Oken Scanner

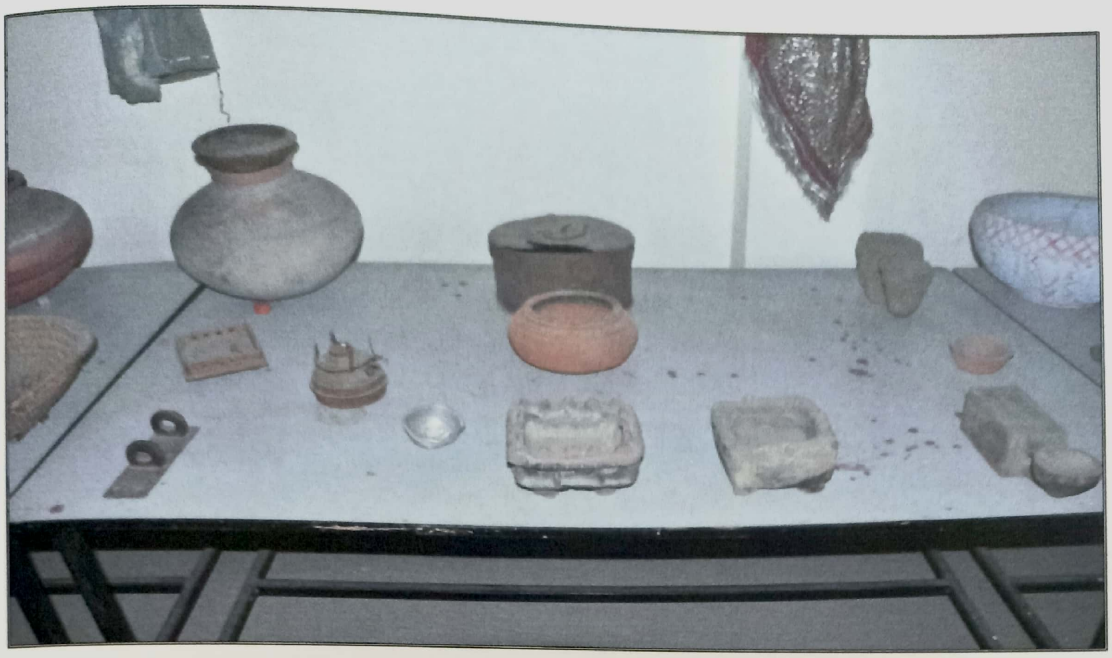

Scanned with Oken Scanner

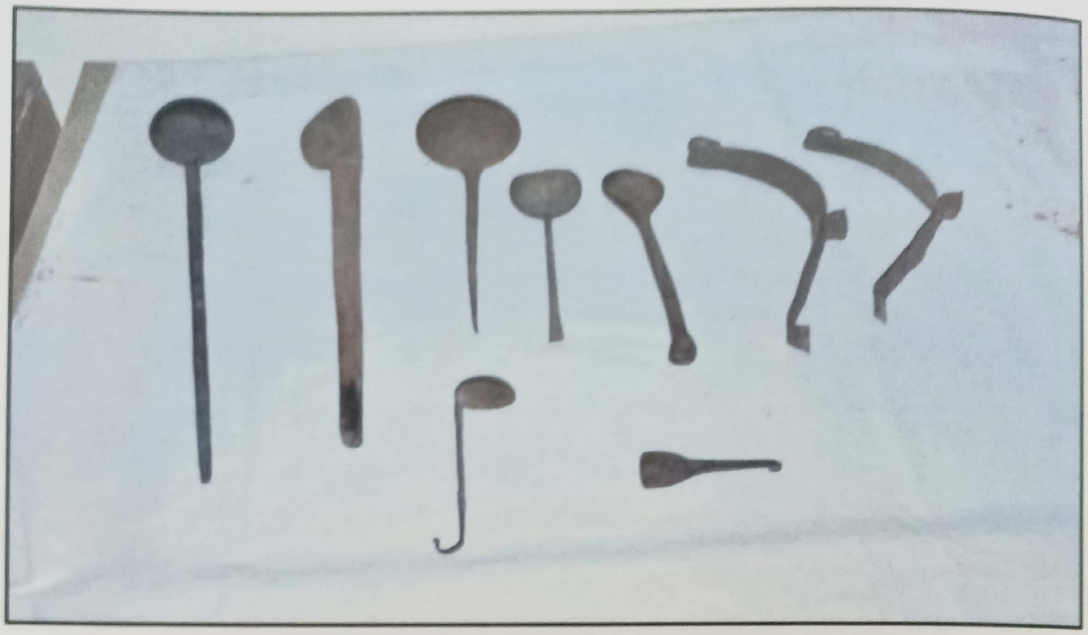

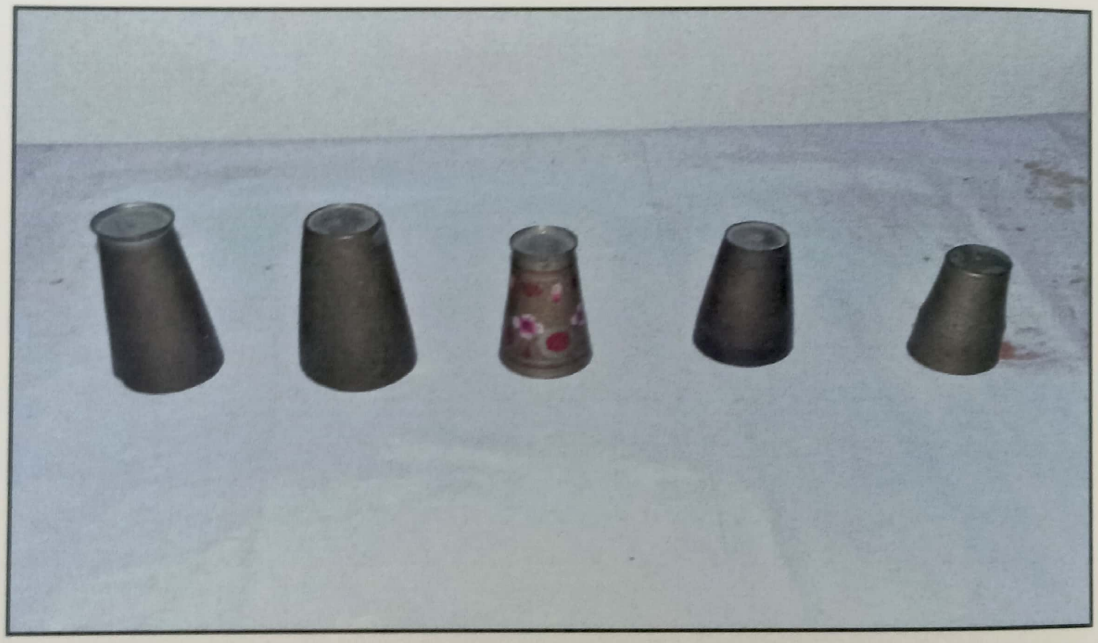

Scanned with Oken Scanner

(ख). पशुपालन व कृषि सम्बन्धित वस्तुएं

कृषि स्थानीय स्तर पर लोगों का व्यवसाय रहा है, ग्रामीण जीवन में कृषि के साथ लोग पशुपालन को भी महत्व देते थे। दूसरी और यह भी सत्य है कि हरित क्रान्ति से पहले पशुओं के बिना कृषि सम्भव नहीं थी। कृषि व्यवस्था में मनुष्य का सबसे नजदीक का रिश्ता बैल व हल से होता था। कृषि क्षेत्र में ट्रैक्टर के प्रयोग के बाद तेजी से मशीनीकरण हुआ तो उपकरणों की प्रकृति बदली साथ में पशुपालन की प्रकृति में भी बदलाव आया। इस बदलाव के बाद यह अवश्यक हो गया कि इन उपकरणों को सम्भाल कर रखा जाए; जिससे नई पीढ़ी देख सके तथा वे लोग भी परिचित हो सके जो नगरीय व्यवस्था से जुडे हैं। इस तरह के उपकरणों में हल, औरणा, गाड़ी का पहिया, ऊँट का पिलाण (दोनों रूपों में सज्जित तथा गैर सज्जित रूप में), दरांती, जैली, तांगली, छाज, तसला, रस्सा, पशुओं को दवाई पिलाने वाली नाल, ऊँट को बांधने के लिए प्रयुक्त होने वाला न्योल, खेत में आवारा पशुओं को पकड़ने वाला चूँगा, पशुओं की सफाई में प्रयोग होने वाला खुर्रा, ऊँट के नाक में डालने वाली नकेल, गोपियां, पटास, तांगड, गाड़ी में प्रयोग होने वाली भूण, बैल के गले वाली घण्टी, हाथ से घास काटने के लिए प्रयोग होने वाला गंडासा व खेत में बीज रोपने के दौरान प्रयोग होने वाला थैला इत्यादि।

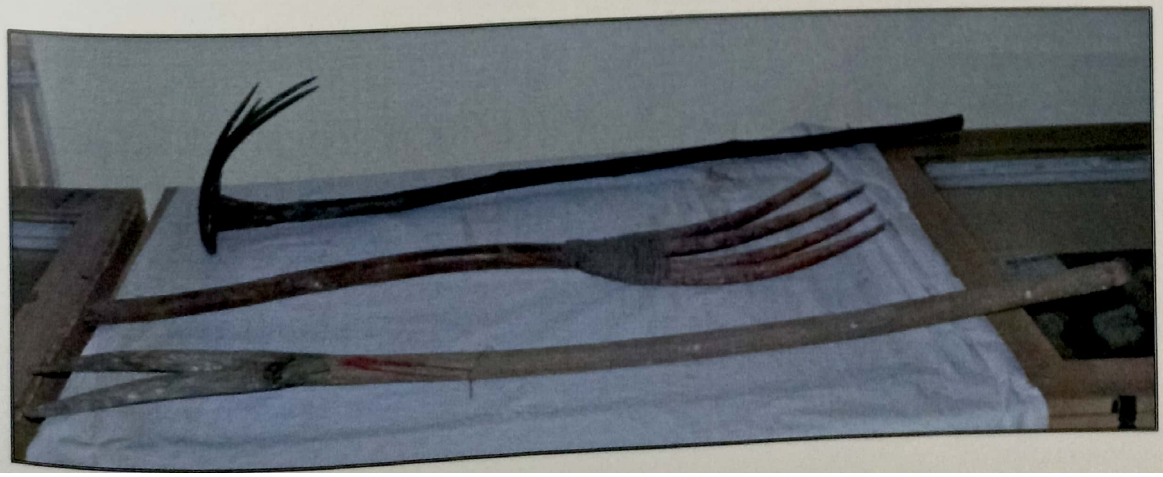

Scanned with Oken Scanner

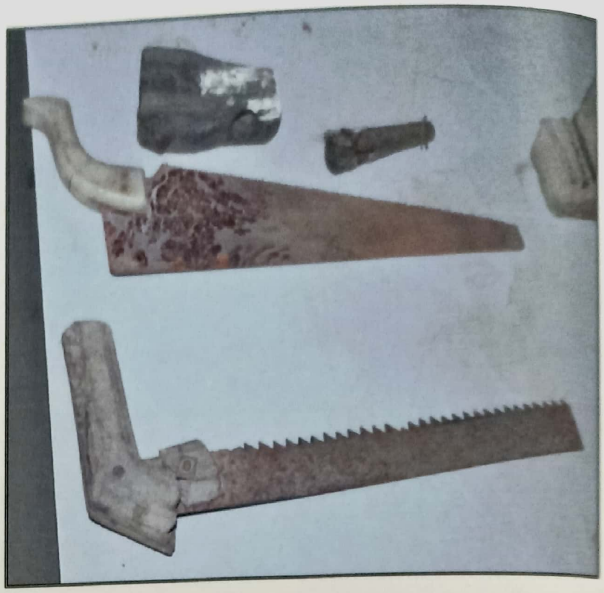

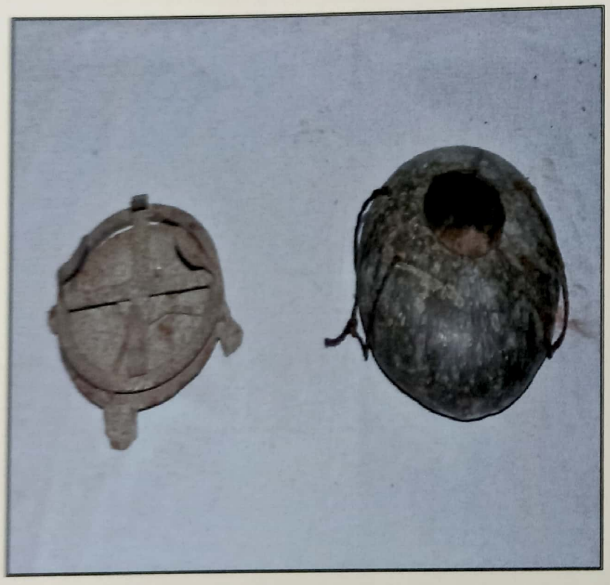

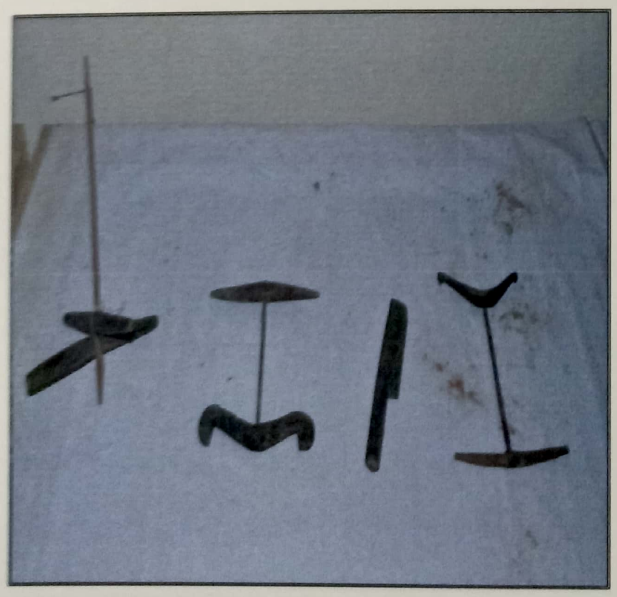

Scanned with Oken Scanner

(ग). दैनिक उपयोग की वस्तुएं

जीवन यापन के दौरान सुबह से शाम तक हम विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। इसी तरह हमारे पूर्वज भी बहुत सी चीजों को प्रयोग करते थे। उनका जीवन वर्तमान की तुलना में अधिक संघर्षमय था। उनके द्वारा प्रयुक्त की गई चीजें इस बात की ग्वाह है वे कम संसाधनों के बाद भी अपनी व्यवस्था को सुचारू ढंग से चलाते थे। उनकी इन चीजों में मिट्टी के बर्तन, दीए, दीवाट, सिगड़ी, तम्बाकू का तुम्बा, सिलबट्टा, कुएं से पानी निकालने के लिए प्रयुक्त होने वाला ढोल, चंडस, स्कूल जाने वाले बच्चों को थैला, तख्ती व सामान्य घर में प्रयोग होने वाली वस्तुएं हैं। ये चीजें प्रायः उस समय की ग्वाही देती है जब गांव में बिजली नहीं पहुंची थी तथा सामान्यतः लोग कच्चे मकानों में रहते थे।

Scanned with Oken Scanner

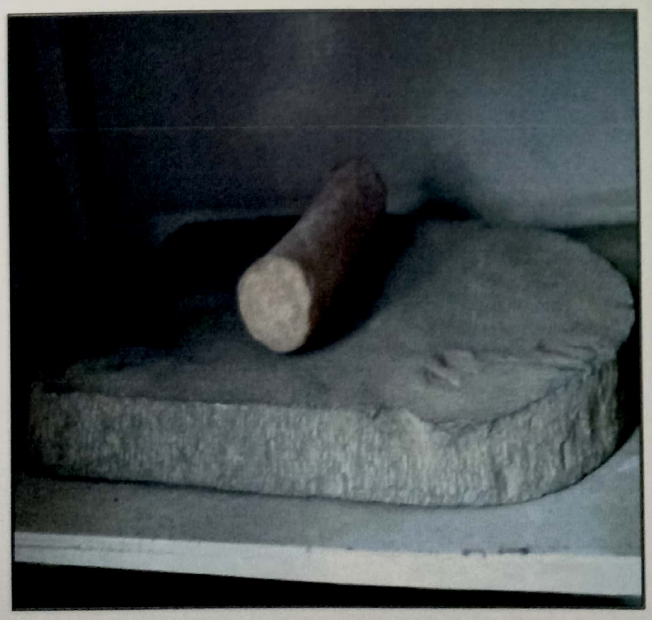

(घ). पहनावा व सजावट की वस्तुएं

स्थानीय स्तर पर पहनावा साधारण रहा है। स्त्रियों की वेशभूषा में कुर्ती, दामण व चुनड़ी मुख्य थी; जबकि पुरूषों की वेशभूषा में धोती कुर्ता व पगड़ी थी। इस तरह बच्चों के लिए झुगला–टोपी का विशेष महत्व था। इन सभी तरह की पोशाक को संभालने व सरंक्षित रखने का कार्य किया गया है। इसी तरह शृंगार की चीजों में आभूषण मुख्य होते थे। ये आभूषण सोना व चांदी के होते थे। आभूषणों के अतिरिक्त शृंगार व सजने के लिए कंघी, कंघे–सिन्दूर तथा बोरला इत्यादि प्रयोग में लाए जाते थे। ये चीजें भी यहां रखी गई है। स्त्री व पुरूष केवल खुद ही सजते थे संवरते नहीं थे, बल्कि अपने घर बैठक तथा दरवाजों को सजाया करते थे। ये सामान्य जीवन में तो था ही साथ में विवाह इत्यादि के अवसर पर इनका महत्व बढ़ जाता था। इस तरह की चीजों में हाथ से निर्मित बिन्दरवाल, झुमर, फूलदान व हिंडोला इत्यादि हैं। इसी तरह महिलाओं द्वारा माचीस, बल्ब व मिट्टी के माध्यम से बनायी गई चीजें हैं। इन चीजों को सितारे इत्यादि लगाकर सजाया जाता था। वर्तमान में इस तरह की चीजें लगभग जीवन शैली का हिस्सा नहीं रही है।

Scanned with Oken Scanner

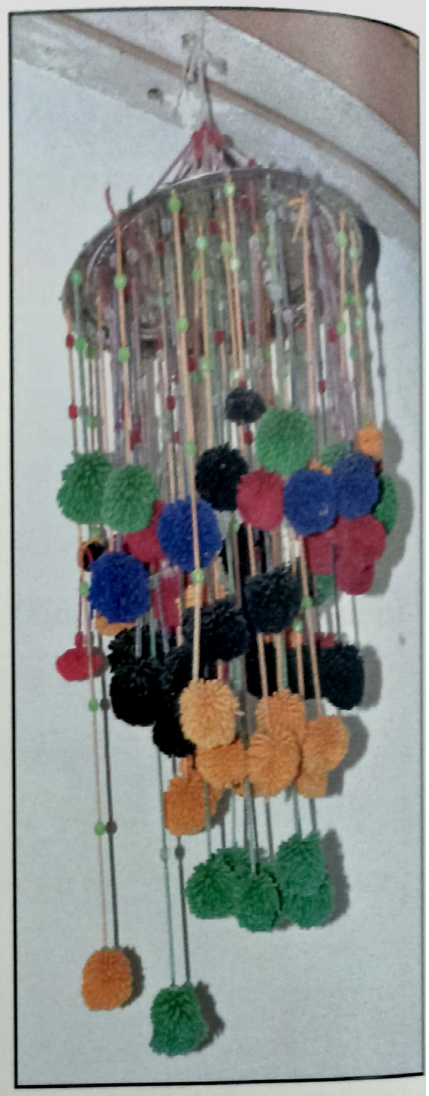

Scanned with Oken Scanner

(ड). अन्य वस्तुए :

संग्रहालय के स्थानीय लोक संस्कृति से जुड़ी कुछ चीजें ओर भी है। इनमें बच्चों के खिलाने, कपड़े से बनी गेंद व पशु–पक्षियों की आकृति, पक्षियों के घोंसले, आभूषण रखने का विशेष डिब्बा, शादी के समय कन्या को दिया जाने वाला गठड़ी बांधने वाला कपड़ा, कपड़े व पोलिथीन से बने बटुए, शादी के अवसर पर दरवाजों पर लगने वाला तोराण, गुल्ली–डन्डा, बारूद रखकर बजाने वाला पटास तथा कुछ मिट्टी के बर्तन इत्यादि।

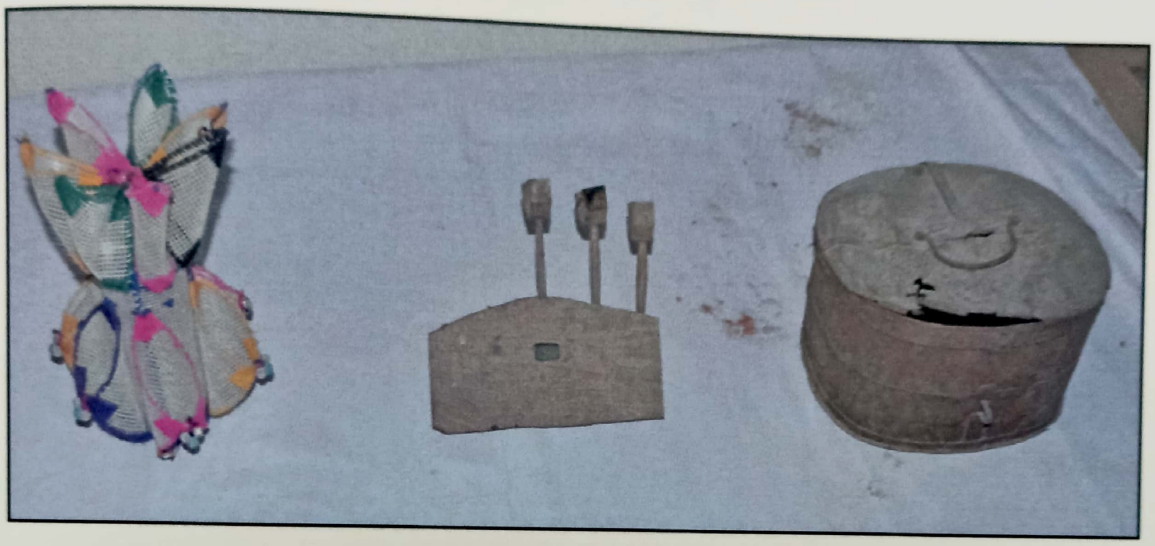

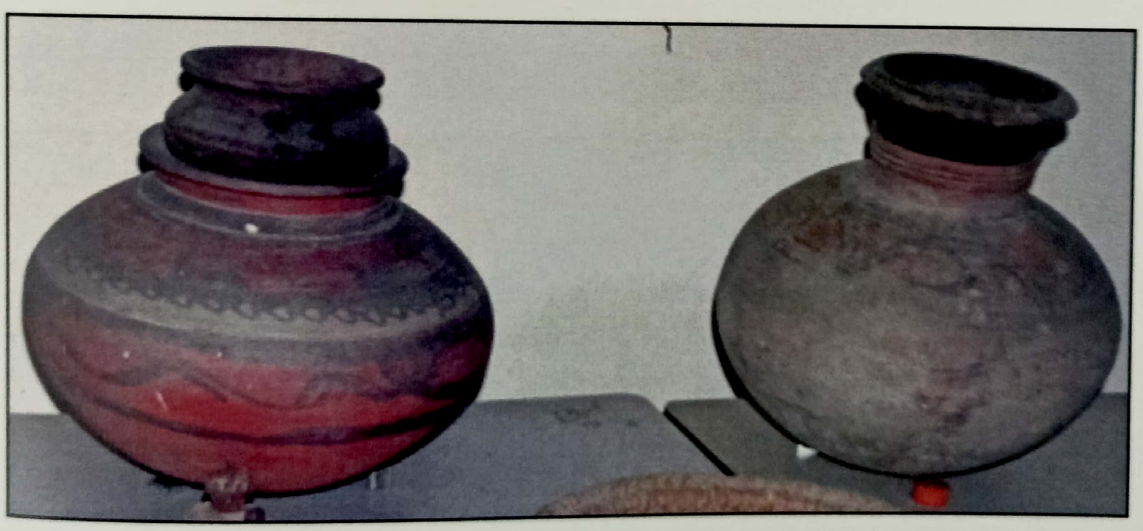

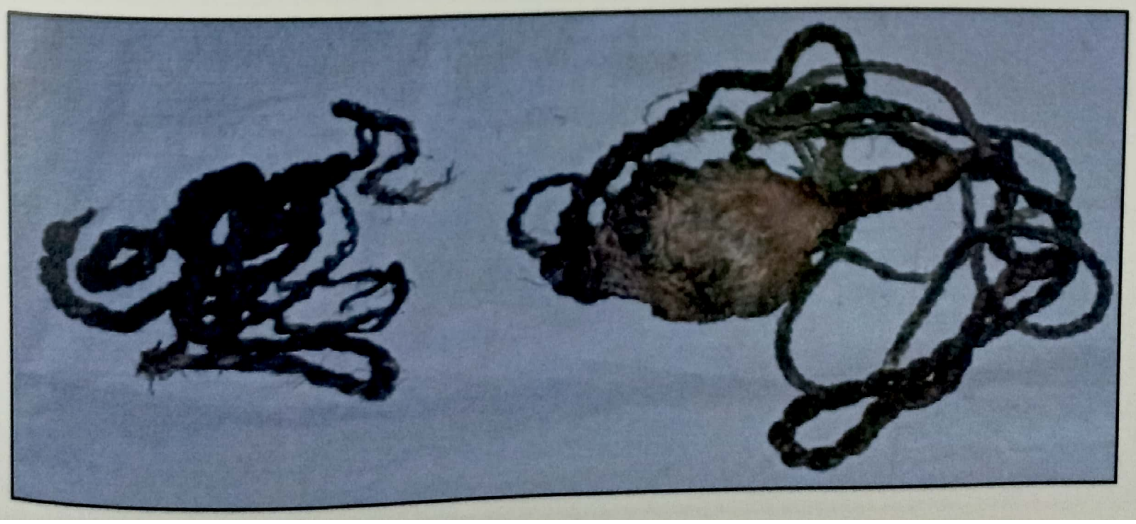

Scanned with Oken Scanner